Peer Reviewed Journal

ISSN 2319-8648

Impact Factor (SJIF)

Impact Factor - 7.139

Current Global Reviewer

International Peer Reviewed Refereed Research Journal Registered & Recognized
Higher Education For All Subjects & All Languages

Special Issue 20 Vol. II

on

भारतीय समाज और विकलांग (दिव्यांग) विमर्श

Indian Society & Ideology of Disability

October 2019

Associate Editor
Dr. Shivaji Wadchkar

Guest Editor
Principal Dr. V.D. Satpute

Assistant Editor
Dr. V.B. Kulkarni
Dr. A.K. Jadhav
Dr. S.A. Tengse

www.publishjournal.com

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue XX , Vol. II | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
Octomber 2019 | SJIF | Impact Factor : 7.139

Impact Factor – 7.139 **ISSN – 2348-7143**

Current Global Reviewer

Peer Reviewed Multidisciplinary International Research Journal
PEER REVIEWED & INDEXED JOURNAL

October 2019 **Special Issue- 20 Vol. II**

भारतीय समाज और विकलांग (दिव्यांग) विमर्श
Indian Society & Ideology of Disability

Chief Editor
Mr. Arun B. Godam

Associate Editor
Dr. S.A. Wadchkar

Guest Editor
Dr. Vasant Satpute

Assistant Editor
Dr. V.B. Kulkarni
Dr. A.K. Jadhav
Dr. S.A. Tengse

Special Issue XX , Vol. II | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
Octomber 2019 | SJIF | Impact Factor : 7.139

निशि उपाध्याय

36. भारतीय समाज और विकलांग विमर्श के संदर्भ में प्रस्तुत शोधालेख 'विकलांगता और मनोविज्ञान' के उपलक्ष्य में नाटक 'बिन बाती के दिप' 145
प्रा.डॉ.संजय व्यंकटराव जोशी

37. विकलांग विमर्श 148
प्रा.खाडे विद्या बाबूराव

38. विकलांग विमर्श स्वरूप एवं अवधारणा 151
डॉ.शेख शहेनाज अहेमद

39. विकलांग विमर्श : 'महादेवी वर्मा की कहानियाँ अलोपी और गुंगिया' 154
प्रा. डॉ. शे. रज़िया शहेनाज़ शे. अब्दुला

40. विकलांग विमर्श और हिंदी साहित्य 159
वाघमारे विकास सुर्यकांत

41. सोशल मीडिया रिपोर्टिंग का सवाल 162
डॉ. वडचकर एस.ए.

42. 'आपका बंटी' उपन्यास में मनोवैज्ञानिक चिन्तन 165
डॉ. सुधीर गणेशराव वाघ

43. 'कुर्सी पहियोंवाली' में विकलांग की समस्याएँ : एक चिंतन 168
डॉ. सतीश वाघमारे

44. भारतीय सहित्य और समाज में विकलांग विमर्श 171
प्रा.डॉ.येल्लूरे एम.ए.

45. विकलांगता और कथासाहित्य 176
देशमुख शहेनाज अ. रफिक

46. विकलांग विमर्श को स्वर देता हिंदी काव्य विश्व 180
डॉ. श्वेता चौधारे

47. समकालीन हिन्दी कहानियों में विकलांग विमर्श 186
डॉ.निम्मी ए.ए

48. हिंदी कहानी साहित्य में विकलांग चरित्र 190
डॉ.कांचनमाला बाहेती

49. विकलांगता एक परिचय 193
प्रा. डॉ. अभिमन्यु नरसिंगराव पाटिल

CURRENT GLOBAL REVIEWER

Special Issue XX , Vol. II | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
Octomber 2019 | SJIF | Impact Factor : 7.139

विकलांगता और कथासाहित्य

देशमुख शहेनाज अ. रफिक

शोधार्थी, आर्ट, कॉमर्स अँड सायन्स कॉलेज, सोनई

साहित्य और समाज का अत्यंत गहरा संबंध है | साहित्य समाज का दर्पण है | समाज में घटित अनेक घटनायें, समस्यायें, गतीविधियाँ आदि को साहित्यकार अपने साहित्य में अत्यंत सूक्ष्मता से व्यक्त करता है | हिन्दी साहित्य में कई चरित्र आ जाते है उन चरित्र में कई विकलांग चरित्र दृष्टिगोचर होते है | हिन्दी साहित्य की विधा कथा में भी कई विकलांग चरित्र उभरकर सामने आ जाते है जो हमे समाज की उनके ओर देखने की दृष्टि और उनके अंदर उत्पन्न होनेवाली उन सभी भावनाओ से अवगत कराते है | हिन्दी कथा साहित्य में जो विकलांग चरित्र बताए गए है उनके माध्यम से कथाकार ने उन्हे जीताने का प्रयास किया है और समाज के लिए प्रेरणा का पात्र बनाया है | कथाकार ने अपने कथाओ में विकलांग पात्र के आंतरिक द्वंद्व, समाज की घृणा, समाज में बेचरा, लाचार, अपाहिज माने जाने वाला जीव जो केवल तुच्छ मात्र है इन सभी बातो को विरोध करते हुए उसे एक सशक्त पात्र के रूप में उभारा है | कहानी के विकासक्रम के आधार पर देखे तो प्रेमचंदपूर्व कहानिकारों ने कल्पना के धरताल पर कहानियाँ लिखि | उसमें वास्तविकता का अभाव था | उस समय के कहानिकारों ने कही भी विकलांगता की ओर ध्यान नही दिया | उसके विपरीत प्रेमचंदयुगीन कहानियाँ यथार्थ के धरातल पर लिखि गई थी जिस कारण उसमें विकलांग चरित्र अपने आप आ जाता है | प्रेमचंद युगीन कथाकारों ने बडे ही सहज और मार्मिक ढंग से विकलांगो की दशा और उनके प्रति देखने का दृष्टीकोन बताया है |

सुदर्शन ने 'हार की जीत' कहानी में विकलांग पात्र को उभारा है लेकिन वह फर्जी अपाहिज है | खडग सिंह जैसे दृष्टकर्मी जो अपाहिज होने का स्वांग रचाते है ओरों के नजर में अपाहिज दृष्ट बनते है | खडग सिंह बाबा भारती को गन्तव्य तक पहुंचा देने को कहता है, बाबा भारती उसकी मदद करते है लेकिन वह बाबा भारती को घोडे से गिराकर जीत की हंसी हंसता है | जिस प्रकार फर्जी अपाहिज बनकर खडग सिंह बाबा भारती का घोडा भगा ले जाता है ठिक उसी प्रकार आज कई फर्जी अपाहिज जाली दस्तावेज बनाकार विकलांग व्यक्तिओ की सेवाए हडप ले जाते है | जो अपाहिज है वह उन सेवाओ से वंचित रह जाता है | आज वर्तमान समय में सफर करते समय हमे कई फर्जी अपाहिज देखने को मिल जाते है | कथा साहित्य में विकलांग विमर्श में यह संदर्भ मिलता है कि "इस घटना की चर्चा किसी से न करना वरना लोग अपाहिज, असमर्थ, दीन-दुखियों की सेवा, सहयता करने से मुंह मोड लेगे |" □

प्रेमचंद द्वारा लिखित 'पत्नी से पति' कहानी विकलांग विमर्श पर आधारित है | इस कहानी में अंकित विकलांग पात्र भीख मांगकर पैसे कमाता है | भीख के पैसे स्वम न खर्च कर देश के लिए दान करता है | एक विकलांग पात्र हम सकलांग लोगो के लिए प्रेरणा बन देश भक्ति जागृत करने का काम करता है | उसी प्रकार जयशंकर प्रसाद की 'मधुआ', ' बेडी', 'दुखिया' आदि कहानियो में विकलांग विमर्श पाया जाता है | 'मधुआ' कहानी में व्यक्ति के हदय को रोंद देनेवाली विकलांग चरित्र की पिडा को व्यक्त किया है | 'बेडी' में अंध चरित्र का चित्रण है जो नौ - दस साल के लडके का सहारा लेकर भिख मांगता है और अपना जीवन यापन करता है |जयशंकर प्रसाद कहते है "अंधे को अंधा न कहकर सूरदास के नाम से पुकारने

Special Issue XX , Vol. II | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
Octomber 2019 | SJIF | Impact Factor : 7.139

की चाल मुझे भली लगी | इस संबोधन में दीन के अभाव की, सहानभूती और सम्मान की भावना थी, व्यंग न था |" उसी प्रकार 'दुखिया' कहानी में राम गुलाम नामक अंध चरित्र मिलता है |

स्व. शेषनाथ शर्मा 'शील' द्वारा लिखि गई 'पगली' कहानी में एक लुली पगली स्त्री का चरित्र अंकित है | अपाहिज होने के कारण इस कहानी में चित्रित ठाकुर एक दिन उसके इज्जत की होली करता है | वह ठाकुर से प्रतिशोध लेना चाहती है इसलिए वह एक दिन मौका पाकर ठाकुर पर हाथ उठाती है तो ठाकुर उसका हाथ इस प्रकार मरोडता है वह सदैव के लिए कंधे से झुलने लगता है लेकिन उसके अंदर का प्रतिशोध खत्म नही होता है अत: वह ठाकुर से बदला लेने में सफल हो जाती है | इस युग के कहानिकारों ने विकलांग चरित्र के प्रति द्या,सहानभूति, करुणा,स्नेह और सेवाभाव को व्यक्त कर लोगो को प्रेरित किया है |

प्रेमचंदोत्तर कहानिकारों की कहानियों में अनेक चरित्र प्रस्तुत हुए है | इलाचंद्र जोशी की कहानियाँ 'पागल की सफाई', 'अनाश्रित', 'क्रय-विक्रय' आदि में मनोविकृतियाँ और मानसिक विक्षिप्तावस्था का चित्रण है | इन कहानियों में चित्रित पात्र मानसिक रूप में विकलांग है |यशपाल जी की कहानी 'अभिशप्त' का बालक विकलांग वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हुए दिखाई देता है | इस विकलांग चरित्र के संदर्भ में शुक्ल जी कहते है -"हां..यह गुंगे नवाब का अहाता है, जहां बाम पुलिस बरी है वही उसके साथ सटी हुई सी कोठरियाँ है | वहाँ पिछली रात खून हो गया, खून ! खून किया किसने ? पाँच साल के बच्चे ने |" इस कहानी का बालक अत्यंत प्रभावी रूप से चित्रित हुआ है |

रांगे राघव की बहुचर्चित कहानी 'गुंगे' में किशोर के व्यक्तित्व को प्रस्तुत किया गया है | वह मूक भावना से सभी अत्याचारो को सहता है कभी- कभी क्रोध में आकर विरोध भी करता है | इस कहानी में विकलांगो के प्रति समाज की संवेदनहीनता को व्यक्त किया है | इस कहानी के माध्यम से लेखक ने विकलांगो के प्रति सामान्य मनुष्य जैसा व्यवहार करने का संकेत दिया है | इस कहानी का बालक जन्म से ही वज्र, गुंगा और बहरा है | वह अनाथ है इसलिए अपनी बुआ के साथ रहता है परंतु बुआ और फुफाजी की अपेक्षा है कि वह कुछ कमाकर लाए, बाजार में पल्लेदारी करे | इस कारण वह बुआ का घर छोडकर बाहर ही रहता है | एक चमेली नामक स्त्री उसे नौकर के रूप में अपने यहाँ रख लेती है परंतु एक दिन चोरी के इल्जाम में उसे घर से बाहर निकाल देती है | इस कहानी में विकलांगो की सामाजिक और पारिवारिक समस्या और समाज में उनकी होनेवाली उपेक्षा की ओर लेखक ने संकेत किया है | महादेवी वर्मा की संस्मरणात्मक कहानी 'आलोपी' में नेत्रहीन अलोपि का जीवन चरित्र अंकित है | यह एक अंध अलोपी और अपाहिज रघु की कहानी है | विकलांग होने के बावजुद दोनो काफी मेहनती है वह छात्रावास के लिए तरकारी ला देने का काम करते है | इस कहानी में लेखिका ने विकलांगो के आत्मविश्वास और अदम्य साहस को प्रस्तुत किया है | उसी प्रकार 'गूगिया' में एक गूंगी स्त्री का चित्रण है जो अत्यंत होशियार है लेकिन गूंगेपन ने उसे दीनहीन बना दिया है |

अज्ञेय द्वारा लिखित 'खिर्वातन बाबू', 'हर्रासंगार' और 'मेजर साहब की वापसी' आदि कहानियों में विकलांग पात्र दिखाई देते है | 'हर्रासंगार' कहानी का पात्र सूरदास हार्मोनियम बजा-बजाकार, भजन गा- गाकर किसी तरह अपना जीवन व्यतीत करते हुए दिखाई देता है | उन्ही की 'मेजर साहब की वापसी' कहानी में युद्ध से आहत संतोत्पत्ति के लिए असमर्थ हो गए युवक की मनोव्यथा को व्यक्त किया है | मेजर साहब का कथन है- " भरती होने से सालभर पहले मेरी शादी हुई थी | तीन

Special Issue XX , Vol. II | Peer Reviewed | ISSN : 2319 - 8648
Octomber 2019 | SJIF | Impact Factor : 7.139

साल हो गए, हम लोग साथ लगभग नही रहे - वैसी सुविधायें नही हुई | हमारी कोई संतान नहीं है |" उसी प्रकार 'चिड़ियाघर' में मानसिक विकलांगता दिखाई देती है |

विष्णु प्रभाकर जी की कहानी 'नेत्रहीन' में खेतिया नेत्रहीन है | वह कडी मेहनत करता है लेकिन अभिजात्य वर्ग द्वारा उसकी उपेक्षा की जाती है | खेतिया के संदर्भ में डॉ. नीलमनी दुबे जी का वक्तव्य है, "नेत्रहीन का अंधा कथा नायक खेतिया पंखा, कूली के श्रमसाध्य कार्य से लेकर झाड़ू- पोछा, पानी भरने, पूजा करने तक के सभी काम स्वयं करता है |" उसी प्रकार गौरा पंत शिवानी की प्रसिद्ध कहानी 'अपराजिता' की मुख्य पात्र चंद्रा कमर के निचले भाग से अपाहिज है | वह डॉक्टर बनना चाहती है लेकिन वह डॉक्टर नही बन पाती | उसकी माँ इस कहानी में मुख्य भूमिका निभाती है | चंद्रा विकलांग है लेकिन उसकी माँ उसकी हिम्मत बाँधते हुए उसे 'फिजिक्स' में पीएच.डी की उपाधि ग्रहण करने में सहयोग देती है | लेखिका चंद्रा के माध्यम से उन तमाम विकलांगो का हौसला बढाते हुए कहती है-" तन विकलांग है तो क्या मन को फौलद बनाना है | दृढ आत्मविश्वास से स्वयं को आगे बढाना है |" मैत्रेय पुष्पा की कहानी 'सहचर' में बंसी नामक नायक की पत्नी अचानक ग्रैग्रीन की शिकार हो जाती है जिस कारण उसको टांग काँटनी पडती है | बंसी अपनी पत्नी से काफी प्यार करता है इसलिए वह उसे छोडकर जाना नही चाहता लेकिन लोग उसे बार-बार दुसरी शादी का मशवरा देते है | बंसी सभी से झगड पडता है | इस कहानी में पति- पत्नी के अगाढ प्रेम को दिखाया गया है | जीवन में प्यार महत्वपूर्ण है शरीर के अवयव नही यह बात बताई गई है | यह कहानी पति-पत्नी के आपसी प्यार और विकलांगता पर प्यार के जीत की कहानी है |

डॉ. विनोद वर्मा की कहानी 'मछुआरे की लडकी' की मुख्य पात्र सरस्वती का दांया पैर मगरमच्छ के निगलने से वह विकलांग हो गई लेकिन फिर भी नर्मदा में बाढ आने पर वह अपने पिता के साथ मिलकर अंधेरी रात में बाढ में फसे सौ लोगों की जान बचाती है | गणतंत्र दिवस पर उसे पुरस्कार दिया जाता है लेकिन बाद में समाज में वह उपेक्षा का पात्र बनकर रह जाती है | भुखमरी के कारण उसका जीवन दैनिय हो गया है | डॉ. चंद्रावती नागेश्वर की कहानी 'बुलंदियो के शिखर पर विमला' उन सभी विकलांगो को प्रेरित करती है | विमला हादसे की शिकार हो जाती है जिस कारण वह अपाहिज हो जाती है लेकिन वह हार नही मानती | एक विद्यालय में अध्यापक की नौकरी करके अपनी आय बचा-बचाकर वह विकलांगो के लिए एक विकलांग विद्यालय की स्थापना करती है | यह कहानी उसके अदम्य साहस और शौर्य के साथ विकलांगो के लिए प्रेरणा स्रोत है |

ममता कालिया की कहानी 'मुन्नी' की मुख्य पात्र मुन्नी भी पोलियो का टीका न देने के कारण कई बिमारियों की शिकार है लेकिन फिर भी कक्षा में प्रथम आती है | कुलदीप बग्गा की कहानी 'पोलियो' की मुख्य पात्र मणिका है जो रंग रूप में अत्यंत सुंदर है और स्वभाव में शील है लेकिन जब वह चलने लगती है तो लोग उसे देखकर मूँह लटका देते है क्योंकि वह अपाहिज है | मनिष नामक लडका मणिका से प्यार करता है उससे शादी करना चाहता है | जब वह अपनी माँ को मणिका के पास लाता है तो मणिका को देखकर माँ को आनंद होता है परंतु दुसरे ही क्षण मणिका की चाल देखकर वह चली जाती है | मनिष की अपने माँ के आगे एक नही चलती | वह अपनी माँ की बात सुनता है और मणिका को छोड देता है | मणिका एक विकलांग है इसलिए उसके परिवार के लोग उसके शादी के बारे में नही सोचते जिस कारण मणिका अंदर-ही-अंदर टुट जाती है | मणिका जैसी आज कई अपाहिज लडकियाँ समाज के सामने एक प्रश्न करती हुई दिखाई देती है कि अपाहिज होने के कारण उनका विवाह नही होंगा ? आज समाज को जरूरत है विकलांगो के प्रति अपने विचार में बदलाव लाने की |

Special Issue XX , Vol. II
Octomber 2019

Peer Reviewed
SJIF

ISSN : 2319 - 8648
Impact Factor : 7.139

इसप्रकार उपर्युक्त सभी कहानियों में आए विकलांग पात्र हमे त्याग, बलिदान, प्रेरणा, ममता और दयालु लगते है। और सभी पात्र समाज की विकलांगता के प्रति संकीर्ण दृष्टी को बताते है। मनुष्य आधुनिक बन तो गया लेकिन विकलांगो के प्रति उसकी देखने की दृष्टी आज भी वही पुरानी है। मनुष्य ने जिल्द बदली है मानसिकता नही। समय में परिवर्तन आ गया लेकिन परिस्थिति आज भी वही-के-वही है। समाज की सोच विकलांग है इस संदर्भ में किशोर गोहिल्ल का कहना है, " दिव्यांग कह भर देने से इनके जीवन में कोई बदलाव नही आएगा, यह केवल छलावा है। हमे इनसन ही समज लेना ही काफी है, असक्षमता के चलते जो असुविधा है उनके लिए इंतजाम होने चाहिए।" सभी कहानियों में विकलांग वर्ग की स्थिति, उनके प्रति समाज का दृष्टीकोण, उनकी मानसिकता, उन्हे आनेवाली कठिनाई के साथ - साथ समाज से लढकर आगे बढ़ने की प्रेरणा दी गई है। 'संकटो से तू क्यो घबराता परिन्दे, हौसलो में उडान भर' की बात कही गई है। हम सब का यह प्रयास होना चाहिए कि हम विकलांगो का हौसला बढाकर, उनमें आत्मविश्वास भर कर उन्हे समाज में कुछ बनने योग्य बनाए और उन्हे आगे लाए।

संदर्भ सूची :-

कथा साहित्यमें विकलांग विमर्श, संपा.डॉ. विनय कुमार पाठक पृ.

संपूर्ण कहानिया, जयशंकर प्रसाद , पृ. □□□

कथा साहित्यमें विकलांग विमर्श, संपा.डॉ. विनय कुमार पाठक पृ. □□□

जयदोल, अज्ञेय, पृ. □□□

विकलांग विमर्श का वैश्विक परिदृश्य, संपा. सुरेश माहेश्वरी, पृ. □□□

कथा साहित्यमें विकलांग विमर्श, संपा.डॉ. विनय कुमार पाठक पृ. □□□

विकलांगो से दिव्यांग हो गए पर कोई बदलाव नही, इंटरनेट